Ilme Deen Ke Bare Me 22 Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 377
Weekly Booklet : 377

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

इल्मे दीन
के बारे में 22 सुवाल जवाब

सफ़हात 24

इल्मे दीन कितना आना चाहिये ? 03
कम वक़्त में ज़ियादा इल्म हासिल करने का त़रीक़ा 07
इल्मे दीन किस से ह़ासिल करें ? 17
क्या जन्नत में भी इल्म में इज़ाफ़ा होगा ? 22

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**इल्मे दीन के बारे में 22 सुवाल जवाब**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात ।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

इल्मे दीन के बारे में 22 सुवाल जवाब

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला : "**इल्मे दीन के बारे में 22 सुवाल जवाब**" पढ़ या सुन ले उसे इल्मे दीन ह़ासिल करने और उस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर मां बाप समेत बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला अ़त़ा फ़रमा ।
اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ो मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।

(معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सुवाल : इल्मे दीन किसे कहते हैं ? क्या सिर्फ़ नमाज़ रोज़े का इल्म ही इल्मे दीन है ?

जवाब : इल्म का मत़लब है : जानना, मा'लूम होना । नमाज़ रोज़े का इल्म भी बेशक इल्मे दीन है, लेकिन इस के इलावा भी बहुत सारी चीज़ें इल्मे दीन में दाख़िल हैं । इल्मे दीन में बहुत वुस्अ़त है और येह इतना ज़ियादा है कि सारा इल्म तो कोई ह़ासिल कर ही नहीं सकता । सब से बड़ी इल्म वाली ज़ात **अल्लाह** पाक की है, जिस को किसी ने इल्म नहीं दिया, वोह अपने आप आ़लिम है । फिर उस के दिये से उस की मख़्लूक़ में ह़ज़रते

आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर क़ियामत तक के लिये सब से बड़े आ़लिमे दीन जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। हर नबी आ़लिमे दीन होता है और अपनी उम्मत में सब से बड़ा आ़लिम वोही होता है। इस वक़्त के नबी मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से बड़े आ़लिम हैं। यूं इल्मे दीन की वुस्अ़त और गहराई बहुत ज़ियादा है, इस लिये जो जितना ज़ियादा इल्मे दीन ह़ासिल कर सके उस को करना चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/271)

सुवाल : ता'लीम ह़ासिल करना हर मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है। येह राहनुमाई फ़रमाइये कि कितना इल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है ?

जवाब : "طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ। या'नी हर मुसल्मान पर इल्म त़लब करना फ़र्ज़ है।"[1] लफ़्ज़े "ता'लीम" पर आदमी थोड़ा आगे पीछे हो जाता है और ता'लीम से मुराद उ़मूमन स्कूल वग़ैरा की ता'लीम ली जाती है ह़ालां कि इस ह़दीस से स्कूल या कॉलेज की ता'लीम मुराद नहीं है।[2] बा'ज़ लोग इस तरह़ की अह़ादीसे करीमा के ज़रीए़ अपने स्कूल, कॉलेज और दुन्यावी ता'लीमी इदारे चला रहे होते हैं, तौबा ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه। अह़ादीसे मुबारका से अपनी अट्कल के ज़रीए़ इस्तिद्लाल करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है,[3] सिर्फ़ मुह़द्दिसीन उ़लमाए किराम हमें इस का मा'ना बता सकते हैं। बहर ह़ाल ! आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इस ह़दीसे पाक की "फ़तावा रज़विय्या" में तफ़्सीलन शर्ह़ फ़रमाई है जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है कि "हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ उ़लूम जानना ज़रूरी हैं जैसे कोई बालिग़ हुवा तो उस पर नमाज़ फ़र्ज़ हो गई, अब

1... ابن ماجہ، 1/146، حدیث:224

2... फ़तावा रज़विय्या, 23/623।

3... فیض القدیر، 1/172، تحت الحدیث:133 ماخوذاً

उस पर नमाज़ के ज़रूरी मसाइल जानना भी फ़र्ज़ हो गया, इसी त़रह़ रमज़ान आया तो जिस पर रोज़ा फ़र्ज़ है उस पर रमज़ान के ज़रूरी मसाइल जानना भी फ़र्ज़ हो गया, यूं ही ताजिर या'नी Businessman पर तिजारत के, गाहक पर ख़रीदारी के, नोकर पर नोकरी के, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है उस पर ज़कात के, इसी त़रह़ जिस को शादी करनी है उस पर निकाह़ व त़लाक़ के ज़रूरी मसाइल जानना फ़र्ज़ हैं।"[1]

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/373, 374)

सुवाल : इल्मे दीन कितना आना चाहिये ?

जवाब : सब से पहले तो अपने अ़क़ाइद से वाक़िफ़ होना ज़रूरी है, इस के इ़लावा गुनाहों की मा'लूमात होना फ़र्ज़ है, बात़िनी बीमारियां मसलन तकब्बुर, ह़सद, रिया वग़ैरा जिन को "मोहलिकात" कहा जाता है इन की मा'लूमात होना भी फ़र्ज़ है। इस के लिये "बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात" और "नजात दिलाने वाले आ'माल की मा'लूमात" येह दोनों किताबें मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कर के पढ़ना बहुत ज़रूरी है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/119)

सुवाल : वक़्त होने के बा वुजूद इल्मे दीन ह़ासिल न करने वाले के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब : वक़्त होने के बा वुजूद इल्मे दीन ह़ासिल न करना बहुत बड़ी मह़रूमी की बात है, क़ियामत के दिन ऐसे शख़्स को सब से ज़ियादा ह़सरत होगी, चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उसे होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का

[1]... फ़तावा रज़विय्या, 23/623, 626 मफ़्हूमन

मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो इस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ ابن عساکر، 51/137) اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में इल्मे दीन ह़ासिल करने के बे शुमार मवाक़ेअ़ मिलते रहते हैं और वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का भी सिल्सिला होता है, लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई इन कोर्सिज़ में दाख़िला लें, اِنْ شَآءَ اللّٰه इल्मे दीन सीखने सिखाने और उस पर अ़मल का जज़्बा पाने का ज़ेह्न नसीब होगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/183, 184)

सुवाल : हमारे मुआ़शरे में दीनी ता'लीम ह़ासिल करने वाले तुलबा की हौसला शिकनी और दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने वालों की हौसला अफ़्ज़ाई की जाती है, इस सोच को कैसे बदला जाए ?[1]

जवाब : दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता अफ़राद या ख़ुद आ़लिम, मुफ़्ती और क़ारी वालिदैन अपनी औलाद की दीनी ता'लीम ह़ासिल करने पर न सिर्फ़ हौसला अफ़्ज़ाई करते हैं बल्कि इस के लिये कोशिशें भी करते हैं लेकिन मुआ़शरे के आ़म अफ़राद का बच्चों को दीनी ता'लीम दिलवाने का ज़ेह्न नहीं होता बल्कि अगर बच्चा दीनी माह़ोल मिलने के सबब ह़िफ़्ज़े क़ुरआन या दर्से निज़ामी करना चाहे तो उसे इस त़रह़ के त़ा'ने मिलते हैं कि क्या मौलवी बन कर मस्जिद की रोटियां तोड़ेगा ? आ़लिम बन कर खाएगा क्या ? B.A कर या डॉक्टर या इन्जीनियर बन ताकि अच्छा रोज़गार मिले। येह बात सिर्फ़ त़ा'नों की ह़द तक नहीं रहती

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

बल्कि बा क़ाइदा दीनी ता'लीम से रोकने के लिये हर्बे इख़्तियार किये जाते हैं मसलन अगर बेटा दर्से निज़ामी में दाख़िला ले लेता है तो अब उस से कमा कर लाने का मुत़ालबा किया जाता है ह़ालां कि घर में मआ़शी तंगी का सामना भी नहीं होता जब कि दूसरी त़रफ़ दुन्यवी ता'लीम दिलवाने के लिये पहले स्कूल में दस साल और फिर कॉलेज और यूनीवर्सिटी में कई कई साल जेब से पैसा दे कर पढ़ाते हैं। इस ता'लीमी अ़र्से में वालिदैन हर त़रह़ की सहूलत दे कर औलाद को ता'लीम के लिये बिल्कुल फ़ारिग़ कर देते हैं। अगर अपना ज़ाती कारोबार हो तो उस में भी दख़्ल अन्दाज़ी से मन्अ़ करते हैं ताकि पढ़ाई में कोई ह़रज न हो। मौजूदा मुआ़शरे में भी दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने वालों की ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई की जाती है। मुख़्तलिफ़ इदारों की त़रफ़ से उन त़ुलबा को स्कॉलर शिप और नोकरियां दी जाती हैं। येही वज्ह है कि मदारिस में पढ़ने वाले त़ुलबा की ता'दाद स्कूल कॉलेज में पढ़ने वालों के मुक़ाबले में एक फ़ीसद भी नहीं। गली गली स्कूल खुले हुए हैं लेकिन मदारिस गिने चुने ही मिलेंगे। वालिदैन अपनी औलाद को दुन्यवी ता'लीम की रग़बत दिलाने के लिये शुरूअ़ से ही येह ज़ेह्न देते हैं :

पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब

खेलोगे कूदोगे होगे ख़राब

तो ऐसे वालिदैन की बारगाह में अ़र्ज़ है कि दुन्या ही सब कुछ नहीं, अस्ल आख़िरत है और आख़िरत में डॉक्टेट या इन्जीनियरिंग किया हुवा बेटा काम नहीं आएगा बल्कि ह़ाफ़िज़ या आ़लिमे दीन बेटा शफ़ाअ़त करेगा जैसा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत

के दिन आ़लिम और आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) को उठाया जाएगा, आ़बिद से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ जब कि आ़लिम से कहा जाएगा कि जब तक लोगों की शफ़ाअ़त न कर लो, ठहरे रहो।

(شعب الایمان،2/268،حدیث:1717)

येह कहना कि मौलवी बन कर खाएगा क्या ? येह मह़ज़ शैत़ानी वस्वसा है, रिज़्क़ **अल्लाह** पाक ने अपने ज़िम्मए करम पर लिया हुवा है और दीनी ता'लीम ह़ासिल करने वाले दुन्यवी ता'लीम वालों के मुक़ाबले में ज़ियादा पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, येही वज्ह है कि येह ख़बरें तो सुनने को मिलती हैं कि फ़ुलां डॉक्टर या अफ़्सर ने ख़ुदकुशी कर ली लेकिन येह ख़बर आज तक सुनने को नहीं मिली कि फ़ुलां आ़लिमे दीन ने परेशानियों से तंग आ कर मौत को गले लगा लिया। मेरा बरसों से चेलेन्ज है कि ऐसी मिसाल आज तक कोई नहीं ला सका कि किसी आ़लिमे दीन ने ख़ुदकुशी कर ली हो। इस का बुन्यादी सबब येह है कि उ़लमाए किराम को **अल्लाह** पाक की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है। वोह **अल्लाह** पाक से डरने वाले होते हैं और उन की येह सिफ़त ख़ुद क़ुरआने पाक ने बयान फ़रमाई है, जैसा कि पारह 22, **सूरए फ़ात़िर** की आयत नम्बर 28 में इर्शादे ख़ुदावन्दी है : ﴿اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि उ़लमाए किराम के किस क़दर फ़ज़ाइल हैं कि उन्हें क़ियामत वाले दिन शफ़ाअ़त का मन्सब दिया जाएगा लिहाज़ा अपनी आख़िरत को पेशे नज़र रखते हुए सारे ही बच्चों को आ़लिमे दीन और ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनाने की कोशिश करनी

चाहिये और अगर ऐसा मुम्किन न हो तो कम अज़् कम एक बच्चे को तो आ़लिमे दीन बना ही डालें। **अल्लाह** पाक ने चाहा तो घर बल्कि ख़ानदान वालों की बख़्शिश का ज़रीआ़ बन सकता है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/200-202)

सुवाल : कम वक़्त में ज़ियादा इल्म ह़ासिल करने का क्या त़रीक़ा है?

जवाब : जो ज़हीन होता है वोह कम वक़्त में ज़ियादा इल्म ह़ासिल कर लेता है क्यूं कि ज़हीन जो पढ़ता है उसे याद रह जाता है जिस की वज्ह से उसे वक़्त कम लगता है। जब कि जो कम ज़हीन होता है उस को ज़ियादा वक़्त लगता है। का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के बैठ कर याद करने से जल्दी याद हो जाता है। शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दो तुलबा का वाक़िआ़ लिखा है जिस का ख़ुलासा येह है कि "किसी जगह से दो त़ालिब इल्मों ने इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये सफ़र किया और जब पढ़ कर वापस आए तो उन में से एक बहुत बड़े आ़लिम बन कर आए जब कि दूसरे ऐसे नहीं थे। जब उ़लमाए किराम ने मा'लूमात ह़ासिल कीं कि येह फ़र्क़ क्यूं है? तो येह बात सामने आई कि जो बहुत अच्छे आ़लिम बन कर आए थे वोह जब भी सबक़ याद करते या इल्मे दीन ह़ासिल करते थे तो इस बात का एहतिमाम करते थे कि उन का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ रहे। तो उ़लमाए किराम ने फ़ैसला दिया कि येह का'बे की त़रफ़ मुंह कर के बैठने की बरकत है।" (تعلیم المتعلم، ص114, राहे इल्म, स. 83) का'बे की त़रफ़ रुख़ कर के बैठना सुन्नत है, (جمع الجوامع، 4/283، حدیث:11876) क्यूं कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर का'बे की त़रफ़ रुख़ कर के बैठा करते थे। (احیاء العلوم، 2/449) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/23)

सुवाल : इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये किस त़रह़ के बच्चे को मद्रसे में दाखिल करवाना चाहिये ?(1)

जवाब : जब दीन के लिये इन्तिख़ाब करना ही है तो फिर ज़हीन तरीन बेटे का दीन के लिये इन्तिख़ाब करना चाहिये। होता येह है कि जो बच्चा वालिदैन के नज़्दीक सब से निकम्मा होता है उसे दीन की त़रफ़ भेजते हैं, वोह भी बा'ज़ अवक़ात अपनी जान छुड़ाने के लिये कि मां घर के काम करेगी या इस को संभालेगी, बाप अपना काम धन्दा करेगा या इस के रोज़ाना के झगड़े निमटाएगा। इस लिये इसे मौलवी के खाते में डाल दो, अब मौलाना जाने और उस का काम जाने। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/63)

सुवाल : चूंकि इल्म पर अ़मल न करने की बहुत सी वईदें हैं, लिहाज़ा अगर कोई शख़्स इल्मे दीन ह़ासिल ही न करे और यूं कहे : "इल्म ह़ासिल होगा तो अ़मल भी करना पड़ेगा !" इस ह़वाले से कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : ऐसा समझना शैत़ान का बहुत बड़ा वार है, इस त़रह़ तो सब लोग जाहिल रह जाएंगे और येह सोच कर कोई भी इल्मे दीन ह़ासिल नहीं करेगा कि "अगर उस ने इल्म पर अ़मल न किया तो वोह फंस जाएगा !" बहर ह़ाल इल्म भी ह़ासिल कीजिये और **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो उस पर अ़मल की भी भरपूर कोशिश कीजिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/236)

सुवाल : अगर कोई अपने इल्म पर अ़मल न करता हो तो क्या उसे इल्म ह़ासिल नहीं करना चाहिये ?

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का इनायत किया हुवा है।

जवाब : वोह आ'माल जो फ़राइज़ो वाजिबात में से हों उन पर अ़मल करना ज़रूरी है, चाहे आ़लिम बनें या नहीं, उन पर अ़मल न करने की वज्ह से बन्दा गुनाहगार होगा, अलबत्ता ! आ'माले मुस्तह़ब्बा या'नी वोह आ'माल जिन के करने पर सवाब हो, लेकिन न करने पर गुनाह न हो उन पर अ़मल न करने से बन्दा गुनाहगार नहीं होगा । बन्दे को चाहिये कि इ़ल्म ह़ासिल करे कि येह सवाब का काम है और जितना हो सके अ़मल करता रहे । सवाब के काम सब को करने चाहिएं आ़लिम हो या ग़ैरे आ़लिम । इल्मे दीन से दूर करने के लिये शैत़ान वस्वसा डालता है, लोग भी मुबल्लिग़ीन को त़ा'ना देते हैं और घर वाले त़ालिबे इ़ल्म को त़ा'ना देते हैं कि "पहले ख़ुद तो अ़मल कर लो फिर लोगों को नेकी की दा'वत देना" घर वालों को ऐसा नहीं कहना चाहिये बल्कि अगर कोई नेकी का काम करता हो तो उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करनी चाहिये । अगर वोह आज अ़मल में कमज़ोर है तो कल मज़्बूत़ हो जाएगा, लेकिन नेकी की दा'वत छोड़ दी तो मज़ीद अ़मल से दूर हो जाएगा । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 9/265, 266)

सुवाल : आज कल लोग स्कूल, कॉलेज और यूनीवर्सिटी की त़रफ़ दौड़े चले जा रहे हैं जब कि दीनी मदारिस की त़रफ़ लोगों का रुज्ह़ान कम है, तो ऐसा क्यूं है ?

जवाब : दीनी मदारिस की त़रफ़ लोगों का रुज्ह़ान कम तो क्या न होने के बराबर है जब कि स्कूल, कॉलेज और यूनीवर्सिटियां भरी पड़ी हैं । लोग अपनी जेब से लाखों रुपै ख़र्च कर के ता'लीम ह़ासिल करते और खाना भी अपनी जेब से खाते हैं मगर फिर भी दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने की त़रफ़ ही रुज्ह़ान है जब कि दीनी मदारिस में मुफ़्त ता'लीम दी जाती है ह़त्ता

कि खाना और रिहाइश भी मुफ़्त दी जाती है फिर भी लोगों का रुज्हान दीनी मदारिस की त़रफ़ कम है। इन ह़ालात को देखते हुए हम ने दारुल मदीना क़ाइम किये हैं जिन में दीनी ता'लीम के साथ साथ दुन्यवी ता'लीम भी दी जाती है ताकि लोग किसी भी त़रह़ दीन के क़रीब आ जाएं। दारुल मदीना स्कूल सिस्टम के तमाम मुआ़मलात शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए उ़लमाए किराम की निगरानी में होते हैं ताकि इन में कोई ग़ैर शरई़ बात शामिल न हो जाए जिस की वज्ह से ता'लीम में ख़राबी पैदा हो और बच्चों की ता'लीमो तरबियत, जे़हन और अख़्लाक़ पर बुरा असर मुरत्तब हो। सब को चाहिये कि वोह अपने बच्चों की आख़िरत पर भी नज़र रखें कि दुन्या तो जैसे तैसे गुज़र ही जाएगी। मैं येह नहीं कहता कि نَعُوْذُ بِاللّٰه आप फ़ाके़ करें, भूके मरें और भीक मांगें। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम भीक नहीं मांगते, हमारे बच्चे भी खाते पीते और पहनते हैं। दा'वते इस्लामी के जितने भी मुबल्लिग़ीन हैं इन में कोई भी भूका नहीं मरता और कोई भी भीक नहीं मांगता, सब अपने अपने तौ़र पर रोज़ी कमा रहे हैं। सब दुन्यवी ता'लीम से कोरे भी नहीं बल्कि हमारे पास एक से बढ़ कर एक दुन्यवी ता'लीम याफ़्ता भी हैं।

उ़लमाए किराम से हमारी बहुत सी ज़रूरिय्यात वाबस्ता हैं

दुन्यवी ता'लीम पर सब ज़ोर लगा रहे हैं मगर हम दीनी ता'लीम की त़रफ़ ज़ियादा तवज्जोह दे रहे हैं कि लोग इस की त़रफ़ भी आएं और उम्मत को उ़लमाए किराम फ़राहम हों। उ़लमाए किराम न हों तो हमें बहुत परेशानी हो जाएगी। जो लोग दीनी ता'लीम की मुख़ालफ़त करते हुए येह कहते हैं कि "मौलवी बनोगे तो मस्जिद की रोटियां खाओगे" तो मैं उन से कहूंगा कि आप ग़ौर करें कि अगर आप पांच वक़्त की नमाज़ नहीं पढ़ते

तो **अल्लाह** पाक आप को तौफ़ीक़ दे आप पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ें लेकिन जुमुआ़ तो पढ़ते होंगे ? तो बताओ ! अगर मौलवी न हो तो क्या कोई अफ़्सर मस्जिद में आ कर आप को जुमुआ़ पढ़ाएगा ? या कोई वज़ीर जुमुआ़ पढ़ाएगा ? या किसी मिल और फ़ेक्टरी का मालिक जुमुआ़ पढ़ाएगा ? जुमुआ़ तो मौलवी ही पढ़ाता है। याद रखिये ! मौलवी आप की ज़रूरत है, आप इसे मान और इ़ज़्ज़त दें। न समझ में आए तो आज़्मा लें, मरोगे तो कोई मिस्टर, कोई अफ़्सर, कोई सरमाया दार, कोई वज़ीर या कोई मिनिस्टर आप का जनाज़ा नहीं पढ़ाएगा, येही मौलवी जनाज़ा पढ़ाएगा, येही मौलवी आप को क़ब्र में उतारेगा, येही मौलवी सूरतें पढ़ कर आप को ईसाले सवाब करेगा। आप ईद की नमाज़ तो पढ़ते होंगे ! तो बताओ ! नमाज़े ईद कौन पढ़ाएगा ? यक़ीनन मौलाना और आ़लिम ही नमाज़ पढ़ाएंगे तो मा'लूम हुवा कि मौलाना और आ़लिम हमारी ज़रूरत हैं, इस लिये मुआ़शरे में येह भी होने चाहिएं। सारी मसाजिद येही लोग संभाले हुए हैं वरना नमाज़ों के लिये इमाम कहां से लाएंगे ? जुमुआ़ पढ़ाने के लिये ख़त़ीब कहां से लाएंगे ? अगर कोई शख़्स दुन्यवी ए'तिबार से अच्छा मुक़र्रिर हो तब भी वोह ख़ुत़्बा नहीं पढ़ सकता क्यूं कि जुमुआ़ का ख़ुत़्बा मौलाना साहि़ब ही पढ़ेंगे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/284–286)

सुवाल : बा'ज़ लोग यूं कहते हैं कि "दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करोगे तो ऐ़श करोगे, इल्मे दीन सीख कर मौलाना बने तो भूके मर जाओगे।" येह इर्शाद फ़रमाइये कि ऐसा कहना कैसा ? नीज़ ऐसा कहने वालों की किस अन्दाज़ में इस्लाह़ की जाए ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"(1) में है : "**सुवाल :** "दुन्यवी ता'लीम हासिल करोगे तो ऐश करोगे, इल्मे दीन सीख कर मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" येह कहना कैसा ? **जवाब :** इस जुम्ले में इल्मे दीन की तौहीन का पहलू नुमायां है इस लिये कुफ़्र है। क़ाइल (या'नी जो ऐसा कह रहा है, उस) पर तौबा व तज्दीदे ईमान लाज़िम है (या'नी अपने कहे से तौबा भी करे और कलिमा पढ़ कर नए सिरे से ईमान लाए) और अगर इल्म व उ़लमा की तौहीन ही मक़्सूद थी तो क़त्ई कुफ़्र है, क़ाइल काफ़िर व मुरतद हो गया और उस का निकाह़ भी टूटा और पिछले नेक आ'माल भी ज़ाएअ़ हुए।" (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 357)

बहर हाल ! इल्मे दीन, दीनी किताब और शरीअ़त की तौहीन कुफ़्र है। (مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر، 2/509) अगर आ़लिमे दीन की तौहीन इल्मे दीन की वज्ह से करता है तब भी कुफ़्र है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/129, مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر، 2/509) **अल्लाह** करीम हम सब का ईमान सलामत रखे।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रही येह बात कि "जो इल्मे दीन हासिल करता है वोह भूका मरता है" तो याद रहे कि भूके दुन्यावी ता'लीम याफ़्ता लोग मरते हैं। मेरा बड़ा पुराना चेलेन्ज है जिस का अभी तक किसी ने जवाब नहीं दिया कि "कोई

---

1 ... "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" येह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मायानाज़ तस्नीफ़ है जिस के 708 सफ़्हात हैं। इस किताब में 398 सुवाल जवाब और 242 कुफ़्रिय्या कलिमात की मिसालें शामिल हैं, इस के इ़लावा ईमान की ह़िफ़ाज़त से मुतअ़ल्लिक़ कई आयात, रिवायात और हि़कायात दर्ज हैं। हर मुसल्मान मर्द व औ़रत को अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र हासिल करने के लिये इस किताब का मुत़ालआ़ ज़रूर करना चाहिये। (शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

एक ऐसी मिसाल लाओ कि किसी आ़लिम और मुफ़्तिये इस्लाम ने कभी ख़ुदकुशी की हो ।" ह़ालां कि दुन्या में रोज़ाना शायद एक मिनट में तीन लोग ख़ुदकुशी करते हैं इस के बा वुजूद भी आज तक किसी आ़लिम के ख़ुदकुशी करने की एक मिसाल भी सामने नहीं आई । येह बात याद रहे कि यहां आ़लिम से मुराद इल्म का आ़लिम है, हर दाढ़ी वाला शख़्स आ़लिम नहीं होता । बे रोज़गारी से तंग आ कर ख़ुदकुशी करने वाले उ़मूमन मॉडर्न लोग होते हैं जिस से येह मा'लूम होता है कि आ़लिमे दीन ख़ुशह़ाल होता है और उसे इतनी टेन्शन नहीं होती जितनी आ़म आदमी को होती है । मज़ीद येह कि आ़लिमे दीन की मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त भी होती है, जब आए तो उस की दस्त बोसी की जाती है, एह़तिराम किया जाता है, अच्छी और इ़ज़्ज़त की जगह पर बिठाया जाता है । यहां तक कि मस्जिद का इमाम जो आ़लिम न हो उस की भी इ़ज़्ज़त की जाती है जब कि इस के मुक़ाबले में आ़म आदमी की इतनी इ़ज़्ज़त नहीं होती । इस लिये येह तसव्वुर ग़लत़ है कि "दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करोगे तो ऐ़श करोगे ।" आ़लिमे दीन होने का येह मत़लब नहीं होता कि वोह दुन्यावी ता'लीम से कोरा हो, इंग्लिश बोलने वाले उ़लमाए किराम भी होते हैं । हमारी दा'वते इस्लामी में भी एक से एक उ़लमाए किराम हैं जो इंग्लिश भी जानते हैं और अच्छी दुन्यावी मा'लूमात भी रखते हैं । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/18, 19)

सुवाल : इल्मे दीन किन त़रीक़ों से ह़ासिल किया जा सकता है ?[1]

जवाब : FGN चेनल देखना, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है ।

इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करना और मक्तबतुल मदीना की किताबों का मुतालआ़ करना इल्मे दीन ह़ासिल करने के बेहतरीन ज़राएअ़ हैं। इसी त़रह़ आ़शिक़ाने रसूल उ़लमाए किराम से शर्ई मसाइल पूछना भी इल्मे दीन ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। हो सकता है कि आप कभी किसी आ़लिम साह़िब के पास शर्ई मस्अला पूछने जाएं और वोह किसी ख़याल में बैठे हों तो यूं वोह आप को डांट भी सकते हैं लेकिन आप ने हरगिज़ उन से बद ज़न नहीं होना। देखिये ! गाहक अगर ताजिर से कभी सख़्त बात कर भी देता है तो ताजिर उस से बद ज़न होने के बजाए उसे संभाल कर अपना सौदा बेच डालता है, इसी त़रह़ आप ने भी ह़िक्मते अ़मली का मुज़ाहरा करना है। बसा अवक़ात थकन या किसी परेशानी में मुब्तला होने के वक़्त मस्अला पूछने पर आ़लिम साह़िब आप को डांट कर येह भी कह सकते हैं कि बा'द में पूछने आना तो आप को बा'द में उन के पास ज़रूर जाना है, येह नहीं कि अब मैं दोबारा क्यूं जाऊं बल्कि अगर वोह आप को 100 बार बुलाएं तो आप को 100 बार जाना है। आप बोलें कि हम आ़लिम साह़िब के पास जाएं तो वोह हमें उठ कर गले लगाएं, प्यार से अपनी जगह पर बिठाएं और फिर चाय भी पिलाएं तो येह सब नहीं हो सकेगा। अगर आप उ़लमाए किराम का अदब करेंगे तो ही आप को उन से कुछ ह़ासिल हो पाएगा और अगर आप का दिमाग़ Mount Everest की चोटी पर हुवा कि उन्हों ने मुझे क्यूं डांटा ? उन का मूड क्यूं ख़राब था ? छोड़ो यार ! मौलाना लोग ऐसे ही होते हैं वग़ैरा वग़ैरा तो फिर आप को उन से कुछ ह़ासिल नहीं हो पाएगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/131, 132)

सुवाल : लोगों के सताने के ख़ौफ़ से मज़्हबी हुल्या इख़्तियार न करना या इल्मे दीन ह़ासिल करने से बचना कैसा ?[1]

जवाब : मुआ़शरे में ऐसे लोग भी हैं जो मज़्हबी नज़र आने वाले अफ़राद को तंग करते हैं लेकिन याद रखिये ! सताने वालों ने तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को भी सताया है। मेरी जब से दाढ़ी आई है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! न कभी कटवाई है और न ही एक मुठ्ठी से घटाई है, सताने वालों ने सताया लेकिन अक्सरिय्यत ने इ़ज़्ज़त ही दी है। जो दाढ़ी मुंडाते हैं क्या उन्हें कोई नहीं सताता ! जो आ़लिम नहीं होते क्या उन्हें लोग नहीं सताते ! बल्कि आ़म अ़वाम पर ज़ुल्म के वाक़िआ़त तो ज़ियादा सुनने को मिलते हैं, बेचारों को क़त्ल कर देते हैं और लाशें जंगलों में फेंक देते हैं, उ़लमाए किराम के बारे में इस क़िस्म के वाक़िआ़त आप को कम सुनने को मिलते होंगे। बहर ह़ाल ! ज़ुल्म तो किसी के साथ भी नहीं होना चाहिये। कहने का मक़्सद येह है कि आ़लिम की इ़ज़्ज़त अ़वाम के मुक़ाबले में ज़ियादा होती है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/205, 206)

सुवाल : क्या औलाद की शर्ई़ राहनुमाई के लिये वालिदैन का तरबियत याफ़्ता होना ज़रूरी है ?

जवाब : जी हां ! वालिदैन को आता होगा जभी तो औलाद की राहनुमाई करेंगे लेकिन यहां तो "आवे का आवा ही बिगड़ा हुवा है", बेचारे वालिदैन को भी इ़ल्म नहीं होता। अगर किसी त़रह़ औलाद को अच्छी सोह़बत मिल जाए जैसे उ़लमाए किराम की बारगाह में ह़ाज़िरी या दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल मिल जाए और जज़्बा ह़ासिल हो जाए तो वोह ख़ुद कोशिश

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

कर के बहुत सारे मसाइल और सुन्नतें वग़ैरा सीख लेती है। बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि औलाद क़ाबू में नहीं आती और न ही मसाइल वग़ैरा जानती होती है लेकिन वालिदैन को दीनी माह़ोल वग़ैरा की बरकत से बहुत से मसाइल का इ़ल्म होता है। यूं दोनों सूरतें मुआ़शरे में पाई जाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में एक ता'दाद होती है जो सीखे हुए होने की ह़ालत में मां बाप बनती है क्यूं कि हमारे हां ज़ियादा ता'दाद नौ जवानों ही की है, अलबत्ता कमा ह़क़्क़ुहू फ़र्ज़ उ़लूम जानने वालों की ता'दाद थोड़ी होगी। **अल्लाह** करीम हम सब को इ़ल्मे दीन का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए। फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करना जैसे नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा के अह़काम सीखना बहुत बड़ी इ़बादत है,[1] इस लिये सब को फ़र्ज़ उ़लूम सीखने चाहिएं। दा'वते इस्लामी में اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सीखने का एक माह़ोल बना हुवा है, इस्लामी बहनों के शरीअ़त कोर्स और दीगर कोर्सिज़ होते हैं[2] इसी त़रह़ इस्लामी भाइयों के भी कई कोर्सिज़ हैं जिन में एक "फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स" भी है जो सिर्फ़ सात दिन का है, हो सके तो येह कोर्स करने की तरकीब बना लें, सात दिन में सब कुछ नहीं आएगा, लेकिन कुछ न कुछ ज़रूर आ जाएगा और मज़ीद सीखने का जज़्बा मिलेगा जिस से हम मुत़ालआ़ वग़ैरा कर के

1... फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : अफ़्ज़ल इ़बादत दीन के मसाइल सीखना है। (جامع صغیر، ص81، حدیث:1280)

2... इस्लामी बहनों की मुख़्तलिफ़ मजालिस के तह़त होने वाले मुतअ़द्दद कोर्सिज़ में से चन्द येह हैं : ❀ जन्नत का रास्ता ❀ दीनी काम कोर्स ❀ तज्वीदुल क़ुरआन कोर्स ❀ इस्लाह़े आ'माल कोर्स ❀ फ़ैज़ाने ज़कात कोर्स ❀ मदनी क़ाइदा कोर्स ❀ नमाज़ कोर्स ❀ फ़ैज़ाने रफ़ीक़ुल ह़रमैन ❀ इस्लामी ज़िन्दगी कोर्स ❀ फ़ैज़ाने उ़म्रह कोर्स ❀ फ़ैज़ाने तिलावत कोर्स ❀ फ़ैज़ाने रमज़ान कोर्स ❀ गूंगी, बहरी और नाबीना इस्लामी बहनों के लिये "स्पेशल इस्लामी बहनें कोर्स"।

आगे बढ़ सकते हैं। कुरआने करीम पढ़ना नहीं आता या तलफ़्फ़ुज़ दुरुस्त नहीं हैं तो मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में आ जाएं, घर बैठे सीखना चाहते हैं तो इस के लिये ऑन लाइन (Online) निज़ाम भी मौजूद है जिस के तह्त कई कोर्सिज़ करवाए जाते हैं। पहले का दौर था कि हज़ारों मील ऊंटों और घोड़ों पर सफ़र कर के अपने पल्ले से खा कर लोग इल्म हासिल करने जाते थे, कभी डाकू भी लूट लेते थे जब कि अब तो कहावत ही बदल गई है, या'नी पहले "प्यासा" कूंएं के पास जाता था, अब "कूंवां" प्यासे के घर आ कर कहता है कि "मुझ से पियो और सैराबी हासिल करो" लेकिन लोगों का अन्दाज़ येह है कि हमें नहीं पीना, हम प्यासे ही मरेंगे। ऐसा न करें, तमाम आशिक़ाने रसूल आगे बढ़ें और इल्म हासिल करें। **अल्लाह** करे दिल में उतर जाए मेरी बात। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/375, 376)

सुवाल : इल्मे दीन किस से हासिल करें ?[1]

जवाब : इल्मे दीन का ख़ज़ाना सिर्फ़ आशिक़ाने रसूल के ज़रीए ही समेटना है। आशिक़ाने रसूल उलमाए किराम जो पक्के सुन्नी और आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मानने वाले हैं, आप उन के क़दमों से लिपटे रहें, اِنْ شَآءَ الله आप को मन्ज़िल मिल जाएगी।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/131, 132)

सुवाल : क्या रोज़ी सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम और डिग्रियां (Degrees) हासिल करने वालों को मिलती है ?[2]

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

2... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

जवाब : आप को तजरिबे की बात बताऊं कि बड़े बड़े सरमाया दार और सेठ ह़ज़रात सनद याफ़्ता (Qualified) या ता'लीम याफ़्ता (Educated) नहीं होते, दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करने से ही रोज़ी मिलती हो ऐसा नहीं है, रज़्ज़ाक़ **अल्लाह** पाक है, वोही सब को रोज़ी देने वाला है, वोह भूका उठाता ज़रूर है लेकिन भूका सुलाता नहीं है, परिन्दे (Birds) भी सुब्ह़ ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भर कर लौटते हैं, वोही कीड़े को कन (या'नी ज़र्रा, Particle), हाथी को मन और व्हेल (Whale) मछली को टन अ़त़ा फ़रमाता है।[1] आप को कई दुन्यावी त़ौर पर पढ़े लिखे अफ़राद के मुतअ़ल्लिक़ सुनने को मिलेगा कि उन्हों ने बे रोज़गारी की वज्ह से ख़ुदकुशी कर ली, लेकिन किसी आ़लिम के मुतअ़ल्लिक़ आप को ऐसा कभी सुनने को नहीं मिलेगा। मैं ऐसा त़न्ज़ के त़ौर पर नहीं कह रहा बल्कि समझाने के लिये कह रहा हूं कि जो दीनी इ़ल्म रखते हैं उन को ह़क़ीर मत जानिये, येह भी **अल्लाह** के अच्छे बन्दे हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/205, 206)

सुवाल : क्या दौराने ता'लीम कोई हुनर मसलन कम्पयूटर डीज़ाइनिंग या कम्पोज़िंग वग़ैरा भी सीख लेना चाहिये ?

जवाब : हुनर और इ़ल्म दोनों होने चाहिएं लेकिन याद रहे ! इस इ़ल्म से मुराद इ़ल्मे दीन है या'नी सब से पहले फ़र्ज़ उ़लूम और अपने ज़रूरी अ़क़ाइद सीखे, इस के बा'द ज़रूरतन उ़लूमे आ़लिया मसलन मुख़्तलिफ़ ज़बानें वग़ैरा सीखे। नीज़ हुनर भी जाइज़ हो और जिस से हुनर सीख रहा है उस से सीखना भी जाइज़ हो, वरना हुनर तो सूद का भी सीखा जाता है !

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 7/421)

1... एक टन में 28 मन होते हैं और एक मन में 40 सेर होते हैं जब कि एक सेर, 1 किलो ग्राम से कुछ कम होता है।

सुवाल : जो शख़्स आ़लिमे दीन न हो लेकिन घर में कुछ न कुछ मज़्हबी व इस्लामी किताबें रखता हो तो क्या उसे सवाब मिलेगा ?

जवाब : क्यूं नहीं मिलेगा ? अगर वोह दीनी किताबें पढ़ता है, इ़ल्मे दीन से मह़ब्बत करता है तो बिल्कुल सवाब मिलेगा। आ़लिम न होना गुनाह तो नहीं है, ज़ाहिर है हर आदमी आ़लिम हो भी नहीं सकता और हर एक पर आ़लिमे दीन होना फ़र्ज़ भी नहीं है।[1] (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/139)

सुवाल : आप को देखा गया है कि इ़ल्मे दीन सिखाने के लिये बड़ी कुढ़न का इज़्हार फ़रमाते हैं, इस की क्या वज्ह है ?

जवाब : **अल्लाह** पाक इख़्लास नसीब फ़रमाए। मुझे इ़ल्मे दीन से मह़ब्बत है और उ़लमाए दीन से प्यार है। इन्सान इ़ल्मे दीन ही के ज़रीए़ इन्सान बनता है, अगर इ़ल्मे दीन से कोरा हो तो ह़ैवानों जैसी ह़रकतें करता है। इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के बड़े फ़ज़ाइल हैं। चन्द एक अ़र्ज़ करता हूं : इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "خُذُوْا عَنِّيْ، خُذُوْا عَنِّيْ" या'नी मुझ से इ़ल्म ह़ासिल करो, मुझ से इ़ल्म ह़ासिल करो। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص156) हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यौमे नह़्र (10, 11 और 12 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को "अय्यामे नह़्र" कहा जाता है) को अपनी सुवारी पर जम्रे की रमी की और इर्शाद फ़रमाया : मुझ से ह़ज के अह़काम सीख लो क्यूं कि मुझे ख़बर नहीं, शायद मैं इस साल के बा'द ह़ज न करूं। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص156-157) मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : कोई है जो मुझ से इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करे ताकि ख़ुद भी फ़ाएदा

---

[1]... याद रखिये ! हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है। (फ़तावा रज़विय्या, 23/624)

हासिल करे और दूसरों को भी फ़ाएदा पहुंचाए। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص157) अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : मुझे इस बात की बड़ी फ़िक्र है कि मेरे पास जो इल्म है लोग उसे हासिल कर लें। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص160) हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में लिखा है कि आप लोगों को इल्म सिखाने में पहल करते और फ़रमाते : मुझ से सुवाल करो। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص160) ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते उ़र्वह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते : लोगो ! मेरे पास आओ और मुझ से इल्म हासिल करो। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص161) ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते इक्रिमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते : तुम्हें क्या हो गया है कि मुझ से सुवाल नहीं करते ? क्या तुम ग़रीब और नादार हो गए हो ? (جامع بیان العلم وفضلہ، ص161) हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर तालिबे इल्म मेरे पास आ कर इल्म हासिल नहीं करेंगे तो खुदा की क़सम ! मैं खुद उन के घर जा कर इल्म सिखाऊंगा। किसी ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! इल्म हासिल करने में उन की अच्छी निय्यत तो होती नहीं है। फ़रमाया : उन का इल्मे दीन हासिल करना ही अच्छी निय्यत है। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص162) हज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर मेरे बस में होता तो इल्म घोल कर पिला देता। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص162) बहर हाल ! सब को इल्मे दीन की हि़र्स होनी चाहिये। दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, मदनी मुज़ाकरे और दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा इल्मे दीन ही के हल्क़े हैं, इन से इल्म हासिल होता है। **अल्लाह** तौफ़ीक़ दे तो जामिअ़तुल मदीना में दाखि़ला ले लें, **अल्लाह** चाहेगा तो आ़लिम बन जाएंगे और बहुत इल्म हासिल होगा। **अल्लाह** करे हमारे अन्दर इल्म की हि़र्स पैदा हो जाए। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 4/224, 225)

सुवाल : दुन्यावी तरक़्क़ी न मिलने के ख़ौफ़ से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने से कतराना कैसा ?[1]

जवाब : बा'ज़ लोग इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने से इस लिये कतराते हैं कि दुन्या में तरक़्क़ी नहीं मिलेगी, शायद येह क़ब्रो आख़िरत की तरक़्क़ी से बे ख़बर हैं इस लिये येह अपनी औलाद को भी दुन्यवी तरक़्क़ी दिलवाने के लिये इ़ल्मे दीन से मह़रूम कर देते हैं। याद रखिये ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल न करना बहुत बड़ी भूल और ख़सारे का सौदा है। जब आप अपने बेटे को सिर्फ़ दुन्या की ता'लीम दे कर दुन्या से चले जाएंगे और आप का बेटा आप को ईसाले सवाब करना चाहेगा भी तो नहीं कर सकेगा कि उसे क़ुरआने करीम पढ़ना नहीं आता होगा। अगर आप अपने बेटे को दीनदार और आ़लिम बना कर जाएंगे तो उसे ऐसा ख़ूब पढ़ना आएगा कि जब वोह आप की क़ब्र पर आएगा तो आप कहेंगे कि येह जाए नहीं, बस मेरे पास बैठा रहे और तिलावत करता रहे। अगर आप ने अपने बेटे को सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम दिलवाई होगी तो वोह आप की क़ब्र पर आ कर तिलावत कैसे करेगा ? अगर वोह तिलावत कर के आप को ईसाले सवाब करे तो आप को उस वक़्त सवाब मिलेगा जब उसे मिलेगा और उसे तिलावत करने का सवाब उस सूरत में मिलेगा जब उसे दुरुस्त क़ुरआने पाक पढ़ना आता होगा। अगर बेटे ने तिलावत करते हुए ऐसी ग़लतियां कीं कि जिन की वज्ह से सारा मा'ना ही ग़लत़ हो गया तो आप को सवाब कहां से मिलेगा ?

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/283, 284)

1... येह सुवाल शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

सुवाल : اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ ! मदनी मुज़ाकरों से बहुत इल्मे दीन सीखने को मिलता है, इस को याद रखने का कोई आसान ह़ल इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : **अल्लाह** करीम हमारा ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ कर दे । जिस बात पर हम Serious (या'नी सन्जीदा) होते हैं वोह बात याद रहती है । नाश्ते का टाइम कितने बजे है ? वोह याद है क्यूं कि Serious हैं । Lunch (या'नी दोपहर का खाना) कितने बजे करना है ? इतने बजे करना है क्यूं कि Serious हैं । फ़ज्र की जमाअ़त का वक़्त क्या है ? हां भई ! क्या टाइम है फ़ज्र का ? नहीं मा'लूम या याद नहीं है क्यूं कि Serious नहीं हैं और जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने जाते नहीं हैं । **अल्लाह** करे हम इल्मे दीन के तअ़ल्लुक़ से Serious हो जाएं, इस को Easy (या'नी हलका) न लें बल्कि इस को अपने सर पर लें कि नहीं नहीं, इसे याद रखना बहुत ज़रूरी है, اِنۡ شَآءَاللہ ह़ाफ़िज़े में मज़बूती आएगी । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/235)

सुवाल : क्या जन्नत में भी इ़ल्म में इज़ाफ़ा होगा ?

जवाब : जी हां ! इ़ल्म बेशक **अल्लाह** पाक की ने'मत है लिहाज़ा जन्नत में भी इ़ल्म में इज़ाफ़ा होगा । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/451)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़ेहरिस्त

इल्मे दीन किसे कहते हैं ?	1
ता'लीम ह़ासिल करना हर मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है	2
इल्मे दीन कितना आना चाहिये ?	3
मवाक़ेअ़ होने के बा वुजूद इल्मे दीन ह़ासिल न करना	3
दुन्यवी तुलबा के मुक़ाबले में दीनी तुलबा की ह़ौसला शिकनी करना कैसा ?	4
कम वक़्त में ज़ियादा इल्म ह़ासिल करने का क्या त़रीक़ा है ?	7
किस त़रह़ के बच्चे को इल्मे दीन ह़ासिल करवाना चाहिये ?	8
इस वज्ह से इल्म ह़ासिल न करना कि "इल्म ह़ासिल होगा तो अ़मल भी करना पड़ेगा !"	8
जो इल्म पर अ़मल न करता हो तो क्या उसे इल्म ह़ासिल नहीं करना चाहिये ?	8
उ़लमाए किराम से हमारी बहुत सी ज़रूरिय्यात वाबस्ता हैं	10
"दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करोगे तो ऐ़श करोगे, मौलाना बने तो भूके मर जाओगे ।" कहना कैसा ?	11
इल्मे दीन किन त़रीक़ों से ह़ासिल किया जा सकता है ?	13
लोगों के सताने के ख़ौफ़ से इल्मे दीन ह़ासिल करने से बचना कैसा ?	15
औलाद की शरई राहनुमाई के लिये वालिदैन का तरबियत याफ़्ता होना ज़रूरी है	15
इल्मे दीन किस से ह़ासिल करें ?	17
क्या रोज़ी सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करने वालों को मिलती है ?	17
क्या दौराने ता'लीम कोई हुनर मसलन कम्प्यूटर डीज़ाइनिंग या कम्पोज़िंग वग़ैरा भी सीख लेना चाहिये ?	18
जो आ़लिमे दीन न हो लेकिन घर में कुछ न कुछ इस्लामी किताबें रखे तो क्या उसे सवाब मिलेगा ?	19
आप "इल्मे दीन सिखाने के लिये बड़ी कुढ़न का इज़्हार फ़रमाते हैं" इस की क्या वज्ह है ?	19
दुन्यावी तरक़्क़ी न मिलने के ख़ौफ़ से इल्मे दीन ह़ासिल करने से कतराना कैसा ?	21
मदनी मुज़ाकरों से बहुत इल्मे दीन सीखने को मिलता है, इस को याद रखने का कोई ह़ल इर्शाद फ़रमा दीजिये	22
क्या जन्नत में भी इल्म में इज़ाफ़ा होगा ?	22

अगले हफ़्ते का रिसाला

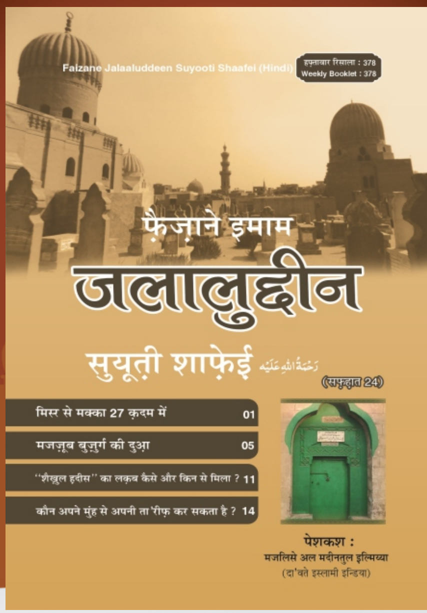

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025